लोकसंग्रह : दिव्य पुरूष का कर्म

डॉ0 रंजीत कुमार कुशवाहा

लोकसंग्रह के वर्णन के क्रम में गीता में वस्तुतः सद्गुणी पुरूष के अन्यों के प्रति, समाज के प्रति एवं जगत् के प्रति आचरण का विश्लेषण किया गया है। प्रथमतः सद्गुणी पुरूष कर्म को त्यागते नही बल्कि कर्मफल का त्याग करते हैं। दूसरा 'इनका कर्म मानवकल्याण हेतु, परार्थ हेतु समर्पित होता है। तीसरे इनके कर्म किसी शास्त्र के आधार पर नहीं बल्कि इनके द्वारा व्यक्त आचरण ही जगत् के लिए नैतिक आचरण की कसौटी होती है। चौथे, इनका आचरण लोभ और भय के कारण नहीं बल्कि शुद्ध आन्तरिक चरित्र के वाह्य अभिव्यक्ति हैं। इनका अन्तःकरण इतना सम, निर्मल और पवित्र होता है कि इससे अभिप्रेत कोई भी कर्म बंधन में नहीं ले जाता बल्कि मोक्षानुकूल ही होता है।